8

कक्षा में बातचीत का शिक्षणशास्त्रीय महत्व

दिनेश कुमार गुप्ता*

आमतौर पर कक्षाओं में बच्चों को बातचीत करने की अनुमति नहीं होती। बातचीत को शोर समझा जाता है। मुख्यत: कक्षा में बातचीत को अनुशासनहीनता माना जाता है। अतः इस स्वाभाविक प्रवृत्ति को पोषित न करते हुए, उन्हें बार-बार चुप रहने को कहा जाता है। अनुभव आधारित यह लेख, भाषा सीखने में बातचीत की अहमियत को दर्शाता है। बच्चों के साथ बातचीत करना क्यों जरूरी है? कक्षा में बच्चों के साथ किन-किन मौकों पर, किस-किस माध्यम से बातचीत की शुरुआत की जा सकती है? किस तरह की बातचीत की जा सकती है? बच्चे इस दौरान क्या-क्या सीख सकते हैं? इस पर प्रकाश डाला गया है। बच्चों को जब भी बातचीत के मौके मिलते हैं तो वे अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं, स्वयं अपनी बातचीत का विश्लेषण करते हैं। उसके पक्ष और विपक्ष में अपने विचार रखते हैं, जिससे उन्हें तर्क करने, विश्लेषण करने की क्षमताएँ, सोचने-समझने का नया आयाम मिलता है। अत: जरूरी है कि बच्चों की कक्षा में बातचीत को अनिवार्य और महत्वपूर्ण शिक्षणशास्त्रीय उपागम के तौर पर कक्षा में इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इसकी शुरुआत इस बात से भी हो सकती है, जैसे कि— स्कूल आते समय रास्ते में क्या-क्या देखा, सुबह घर पर क्या-क्या हुआ आदि। यह गतिविधि कक्षा में बच्चों के साथ बातचीत के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करती है और कक्षा की बातचीत में सभी बच्चों की भागीदारी भी सुनिश्चित करती है। इसके साथ-साथ यह बच्चों के व्यक्तिगत अनुभव और स्कूल की पढ़ाई के बीच संबंध को भी जोड़ती है।

प्राथमिक स्तर पर भाषा सिखाने के लिए यह अति आवश्यक है कि बच्चों के साथ अधिक से अधिक बातचीत हो। बच्चों के साथ जितनी अधिक और विविध मुद्दों पर बातचीत होगी, उस विषयवस्तु पर उनकी अवधारणाएँ उतनी ही स्पष्ट और पुख्ता होंगी। बच्चों के साथ बातचीत से ही उनके संदर्भों और अनुभवों को कक्षा तक लाया जा सकता है, जो बच्चों की समझ को जानने के लिए शिक्षक को आधार देते हैं। जब बच्चों की भाषा को कक्षा में स्थान और सम्मान मिलता है तो उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है। ऐसा तब अनुभव हुआ जब कक्षा 1 में बच्चों के साथ 'मछली जल की रानी है' कविता पर शिक्षण

**प्रवक्ता,* अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गंगापुर सिटी, राजस्थान 322 201

किया। उस कक्षा में एक लड़की ने कहा कि 'उसकी थाली से मछली को बिल्ली खा गई थी'। इस बात पर सभी बच्चे हँसने लगे। परंतु जब बच्चों से इस पर विस्तार से बात हुई, तो यह उभरकर आया कि वह जो कह रही है, वह बिल्कुल ठीक है। बच्चे ने उस घटना के बारे में विस्तार से बताया कि उस दिन उसके साथ क्या हुआ था? यह अनुभव इस बात की ओर भी इशारा करता है कि विद्यालय और कक्षा में बच्चों को खुली बातचीत के लिए अधिक से अधिक अवसर देने पर बच्चों की बातचीत को विस्तार मिलता है और उनमें खुलापन भी आता है।

पिछले तीन वर्षों में कुछ प्राथमिक विद्यालयों में काम करने के दौरान हिंदी भाषा की कक्षाओं में बच्चों और शिक्षकों के साथ जुड़ना हुआ। इस दौरान खासकर यह देखने को मिला कि बच्चों की बातचीत को कक्षा में बहुत कम महत्व दिया जाता है। शायद इसके पीछे यह मान्यता होगी कि इतने छोटे बच्चों के साथ क्या बातचीत करेंगे, क्योंकि वे तो दिन भर बात ही करते हैं, अगर कक्षा में भी बात ही करेंगे तो पढ़ेंगे कब? किंतु जब बच्चों के साथ घुलना-मिलना हुआ, तब मैंने पाया कि दरअसल बच्चे अधिकांश समय अक्षर, मात्राओं, शब्दों और पाठ में दिए प्रश्न-उत्तरों में ही व्यस्त रहते हैं। इस प्रक्रिया में उनसे जो पूछा जाता है, वे उसी का जवाब देते हैं। बच्चों से बातचीत के महत्व और उपयोगिता को और गहराई से जानने-समझने के लिए अगर पिछले कुछ वर्षों के सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण मॉड्यूलों (सरोकार 2012–13, मंथन 2014–15, अर्जन 2016–17) पर नजर डाली जाए, तो यह देखने को मिलेगा कि उनमें भी बच्चों के साथ बातचीत का महत्व, उपयोगिता और कक्षा में बातचीत करने के तरीकों को लेकर बहुत चर्चा हुई है। किंतु आज भी यदा-कदा ही देखने को मिलता है कि बातचीत को कक्षा में एक महत्वपूर्ण और उपयोगी शिक्षणशास्त्र के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा हो।

बच्चे की भाषा और अध्यापक नामक किताब में कृष्ण कुमार (2008) लिखते हैं, "जो अध्यापक बच्चों को बातचीत करने से रोकते हैं, उन्हें शिक्षण सामग्री की कमी की शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं है। वे पहले ही ऐसे बेशकीमती साधन को बेकार जाने दे रहे हैं, जिसके लिए कोई पैसा खर्च नहीं करना पड़ता। इसलिए ऐसा स्कूल जहाँ छोटे बच्चे बात करने को स्वतंत्र नहीं, बड़ा फिजूलखर्च स्कूल कहलाएगा।" कृष्ण कुमार (2008) बच्चों की बातचीत को एक महत्वपूर्ण शिक्षण सामग्री के रूप में इस्तेमाल करने की सलाह देते हैं, जो बिना किसी अतिरिक्त व्यय के एक उपयोगी 'शिक्षण सहायक सामग्री' है। बच्चों के साथ बातचीत रोचक और महत्वपूर्ण प्रश्नों के हल तलाशने में भी हमारी सहायता करती है। इस बात की पुष्टि गैरथ बी. मैथ्यूज के उस विचार से होती है जिसे उन्होंने अपनी किताब बच्चों से बातचीत में लिखा है। मैथ्यूज (1996) के अनुसार— "बच्चों के साथ सार्थक बातचीत की जाए तो वे स्वयं चीजों की पड़ताल करेंगे और सही व गलत के निष्कर्ष पर पहुँचेंगे। वयस्क कभी बच्चों से उन विषयों पर बातचीत नहीं करते हैं जो उन्हें स्वयं कठिन और समस्याग्रस्त लगते हैं। बच्चों को ज्ञान की तलाश है इसके लिए वे समझदारी भरे और प्रेरक प्रश्न

पूछते हैं। जब तक उनकी ज्ञान की भूख शांत नहीं हो जाती तब तक वे इन प्रश्नों को लगातार पूछते हैं; परंतु जब उन्हें लगता है कि उनके चारों ओर के वयस्कों को उनकी बात सुनने की या उनके विचार जानने की कोई इच्छा नहीं है, तो वे प्रश्न पूछना बंद कर देते हैं"।

मेरी समझ में बच्चों को प्रश्न पूछने से रोकना या उनकी बात की अवहेलना करना बच्चों को जिज्ञासु होने से रोकता है, उनके सीखने की प्रक्रिया में नीरसता पैदा करता है। फलस्वरूप, बच्चों और अध्यापक के बीच एक गहरी खाई पैदा हो जाती है। बच्चों को बोलने की मनाही और बातचीत के मौके न देने से वे सीखना कम कर देते हैं। इस बात की पैरवी गिजुभाई बधेका और जॉन हॉल्ट ने भी की है। बच्चों के साथ काम करने के दौरान मुझे यह अनुभव हुआ कि बच्चे अपने अलग-अलग उद्देश्यों के लिए अलग-अलग प्रकार की बातचीत करते हैं, और यह जरूरी नहीं कि सभी उद्देश्य शिक्षक के लिए आवश्यक ही हों। परंतु बच्चों की इस बातचीत को विस्तार देने और वातावरण बनाने के लिए यह आवश्यक है कि कक्षा में हर बच्चे को यह विश्वास दिलाया जाए कि जब वह बोलेगा तो उसे सुना जाएगा। बच्चे यह भी महसूस करें कि उनका बोलना अध्यापक को अच्छा लगता है। बच्चे अपनी बात को खुलकर रख सकेंगे। यह बातचीत बच्चों को कक्षा से जोड़ने एवं पाठ के संदर्भ पर लाने और उनके पूर्व ज्ञान को कक्षा में शामिल करने में एक महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

पहली बार जब कक्षा 1 और 2 में बच्चों के साथ बातचीत पर काम शुरू करने की योजना बनाई तो इसकी शुरुआत बच्चों को जानने-समझने से हुई। बच्चों से कहा, "आज हम अपने बारे में बातचीत करेंगे कि कौन कहाँ से आता है? आपके घर में कौन-कौन रहते हैं? आपके माता-पिता क्या काम करते हैं? आपको क्या अच्छा लगता है? आप लोग कौन-कौन से खेल खेलते हो?" इत्यादि। कक्षा में बातचीत को एक महत्वपूर्ण शिक्षण पद्धति के रूप में इस्तेमाल किए जाने से संबंधित इस गतिविधि की शुरुआत में तो बच्चे बातचीत में बहुत अधिक शामिल नहीं हुए, और बातचीत एक स्तर तक जाने के बाद बंद हो जाती थी।

बातचीत बंद होने के कारणों पर लगातार कार्य किया। जब बच्चों के जवाबों को ही प्रश्न बनाना शुरू किया, तो धीरे-धीरे बच्चों ने भी बातचीत को कक्षा शिक्षण का हिस्सा मान लिया। जिससे बच्चों को गहराई से जानना-समझना आसान हो पाया। इससे यह भी पता चला कि कुछ बच्चे तो ऐसे हैं जिनके माता-पिता उन्हें सोता हुआ छोड़कर काम पर चले जाते हैं— ऐसे में अगर उनकी नींद समय से खुल गई तो, और स्कूल आने का मन हो गया तो, वे आ गए और नहीं हुआ तो नहीं आए। जिन बच्चों के साथ यह समस्या थी, उनकी कक्षा में उपस्थिति भी अच्छी नहीं थी। कक्षा 2 में पढ़ने वाली छात्राओं ने बताया कि उन्हें सुबह खाना बनाकर स्कूल आना होता है, क्योंकि माता-पिता दोनों काम पर जाते हैं और इस कारण स्कूल आने में देर हो जाती है; देर से आने पर डाँट या मार पड़ने के डर से वे स्कूल नहीं आती हैं। बच्चों के संदर्भों को जानने-समझने के बाद इस पर बच्चों और शिक्षकों से बातचीत हुई कि अगर उन्हें स्कूल आने में थोड़ी देर हो जाए तो उन्हें इसकी अनुमति दे दें। इससे बच्चों का पोर्टफोलियो बनाने में काफी मदद

मिली, जैसे— उनकी पारिवारिक एवं आर्थिक स्थिति कैसी है, उनकी रुचि किस चीज में है और उनके साथ घर में कैसा व्यवहार किया जाता है। इससे कक्षा के बच्चों के प्रति संवेदना उत्पन्न हुई और इसके बाद बच्चों के साथ काम करने का नजरिया ही बदल गया।

कविता के माध्यम से बातचीत के अवसर

बच्चों के साथ कविताओं पर काम करने के दौरान यह देखने को मिला कि बच्चों के अनुभवों को जोड़ा जाए तो वे सक्रिय प्रतिभागिता करते हैं और कविता से जुड़ पाते हैं। इसके लिए कुछ की कविताओं के अनुभव इस प्रकार रहे— कविता 'बारिश आई छम-छम-छम' पर काम करने से पहले बच्चों के साथ बारिश, बादल, छाता, लड़की आदि पर बातचीत हुई कि यह हमने कहाँ-कहाँ देखे हैं? बच्चों ने बताया कि उन्हें बारिश में भीगने में मजा आता है; बारिश में नाव चलाना अच्छा लगता है; विशाल को बारिश में साईकिल चलाना अच्छा लगता है; कुछ और बच्चों को भी बारिश में साईकिल चलाना अच्छा लगता है; किसी को बारिश पसंद नहीं है आदि। उन्होंने यह भी बताया कि बारिश के दौरान स्कूल में पानी भर जाता है तो अच्छा नहीं लगता है, क्योंकि कीचड़ हो जाती है तो खेलने को नहीं मिल पाता है। कुछ बच्चों ने बारिश से जुड़े अपने अनुभव भी साझा किए। राहुल ने बताया कि वह एक बार मैदान में पानी में गिर गया था और उसके कपड़े खराब हो गए थे। दिव्या ने बताया कि उसे बारिश में नहाना अच्छा लगता है। हेमपुष्पा ने बताया कि उसके घर में पानी आ जाता है तो उसे अच्छा नहीं लगता है। ऐसे ही अन्य शब्दों, जैसे— बादल, छाता, लड़की आदि पर भी बच्चों से बात हुई। बातचीत के बाद कविता को हाव-भाव से गाना, कविता पर बच्चों से बात करना, चित्र बनाना, चित्रों में रंग भरना और ध्वनियों पर काम करना आदि, आगे के काम हुए।

ऐसे ही एक अन्य कविता पर काम करने के दौरान भी अनुभव हुआ। कविता थी 'एक छोटी-सी किश्ती मेरे पास'। इस पर कार्य करने से पहले बच्चों को नाव का चित्र दिखाया। बच्चे 'नाव' शब्द से तो परिचित थे, परंतु कविता में 'किश्ती' शब्द से परिचित नहीं थे। कविता पर बच्चों के साथ काम करने के बाद लगभग

सभी बच्चे 'किश्ती' से परिचित हो पाए। बच्चों ने यह भी बताया कि 'किश्ती' को नाव, बोट और नौका भी कहते हैं। साथ ही उन्होंने नाव से जुड़े अपने अनुभव भी साझा किए। कुछ बच्चों ने बताया कि एकबार जब वे नैनीताल घूमने गए थे, तब वहाँ उन्होंने नाव देखी थी; कुछ बच्चों ने बताया कि उन्होंने गूलरभोज डैम में नाव देखी है। लोग नाव में बैठकर सैर भी करते हैं और मछली भी पकड़ते हैं। बच्चों के अनुभवों को श्यामपट्ट पर लिखने से फायदा हुआ— बच्चे समझ पाए कि जो बात वे बताते हैं, वह भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी किताब में लिखी बात महत्वपूर्ण होती है।

कहानी के माध्यम से बातचीत के अवसर

कक्षा 1 में बच्चों के साथ 'इल्ली और तितली' की कहानी पर कार्य किया। छोटे बच्चों के हिसाब से यह बहुत बड़ी अवधारणा है कि इल्ली से तितली कैसे बनी, पर जब बच्चों के साथ चित्र-कहानी के माध्यम से इस पर बातचीत करना शुरू किया तो लगभग सभी बच्चे यह समझ रहे थे कि इल्ली से तितली कैसे बनती है। बच्चों को इल्ली का चित्र दिखाया, तो कुछ बच्चों ने बताया, "आचार्य जी, यह तो वही कीड़ा है जो घास में रहता है और पत्ता खाता है।" इसके बाद दूसरी कहानी 'घर' पर काम करने के दौरान बच्चों ने कहा, "आचार्य जी, इल्ली का घर भी घास में होता है और वह घास खा-खाकर हरी हो जाती है।" फिर, कुछ दिनों के बाद विद्यालय के प्रांगण में खूब सारी इल्लियाँ आ गईं, तो बच्चे एक दूसरे को खींच-खींचकर क्यारियों के पास ले जा रहे थे और कह रहे थे, "देखो... हमने इल्ली की कहानी सुनी थी वैसी ही इल्ली है..." यहाँ तक कि हर बच्चा मुझे आकर यह बता रहा था, "आचार्य जी, हमने सचमुच की इल्ली देखी है!" बच्चों की बातचीत से समझ आया कि वे अगर किसी बात को ठीक तरह से समझते हैं तो उसको अपने आगे की बातचीत में भी शामिल करते हैं, और ऐसे ही कहानियों के तार आगे की कहानियों से जुड़ते हैं।

चित्रों के माध्यम से बातचीत के अवसर

बातचीत के लिए चित्र, एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके लिए कक्षा की पाठ्यपुस्तक *हँसी-खुशी* से 'घर' चित्र-पाठ चुना गया और उस पर पाठ-योजना तैयार की गई। बच्चों से पाठ में दिए चित्रों पर बातचीत हुई। बच्चों से पूछा कि उन्हें चित्र में क्या-क्या दिख रहा है? बच्चों ने बताया कि जानवर, घर, आदमी, बच्चे,

पेड़, चिड़िया, घोसला, चिड़िया के बच्चे, पहाड़, फूल, नदी आदि दिखाई दे रहे हैं। इसके बाद बच्चों के साथ 'घर' को लेकर बात हुई कि 'घर क्या होता है?' इस पर बच्चों ने बहुत ज्यादा जवाब तो नहीं दिए— वे केवल यही बता पाए कि जहाँ हम और मम्मी-पापा रहते हैं, घर में खेलते भी हैं आदि। बच्चों के अनुभवों को सुनने के बाद उनसे पाठ में बने चित्रों के बारे में बातचीत हुई— इनमें किस-किस के घर के चित्र बने हुए हैं? चिड़िया का घर कहाँ है? सभी ने कहा, "पेड़ पर!" फिर, चर्चा हुई कि अगर कोई चिड़िया मकान में या आले या कहीं और रहती है तो उसको क्या कहेंगे, और वह वहाँ क्यों रहती है? कुछ बच्चों को समझ में आ गया कि जैसे हमारा घर मकान है वैसे ही चिड़िया का घर उसका घोसला होता है, गाय का घर गौशाला होता है और मछली का घर पानी में होगा। चित्रों पर बात करने के बाद बच्चों ने घर और पेड़ पर चिड़िया के घोसले का चित्र बनाया। सभी बच्चों को यह भी समझ में आ गया था कि जो जहाँ रहते हैं, वह उनका घर होता है। खासकर बच्चों को यह अवधारणा समझ में आ गई थी कि घर क्या होता है। अत: बातचीत का प्रयोग विभिन्न अवधारणाओं के स्पष्टीकरण में किया जा सकता है।

छुट्टियों के अनुभवों के माध्यम से बातचीत के अवसर

बच्चों के साथ उनके अवकाश के दिनों के बारे में भी बात करना जरूरी है, क्योंकि वे जब लंबी छुट्टियाँ बिताकर स्कूल आते हैं, तो बहुत उत्सुक रहते हैं कि शिक्षक उनसे पूछें कि उन्होंने अपनी छुट्टियाँ कैसे बिताईं। यह एक अच्छी गतिविधि है, जिसमें बच्चों से उनकी छुट्टियों पर बात की जाए। गर्मियों की छुट्टियों के बाद जब स्कूल खुला तो सभी को यह काम दिया गया कि वे छुट्टियों के अपने-अपने समय के बारे में लिखेंगे— गर्मी की छुट्टी कैसे बीती? किस ने क्या-क्या किया? कहाँ-कहाँ घूमने गए? इत्यादि। बच्चों ने अपने अनुभवों को लिखकर दर्ज किया। रोहित दिल्ली गया था तो उसने दिल्ली में कमल मंदिर देखा और बहुत जगह घूमने गया और रेस्टोरेंट में खाना भी खाया— यह सभी को बताया और फिर उसको लिखा। मनीषा कोलकाता गई थी तो उसने कोलकाता के बारे में और अपनी मौसी की बेटी की शादी के बारे में बताया। नीरज कक्षा दो में पढ़ती है। वह जब भी कुछ लिखती है तो उसमें घर का काम और घर में अक्सर मार पड़ने का जिक्र जरूर होता है। राजकुमार और कुछ बच्चों ने एक सड़क दुर्घटना के बारे में बताया, जिसमें एक बस और बोलेरो की टक्कर हो गई थी और बस वाला बस छोड़कर भाग गया। बोलेरो वाला लगभग एक घंटे तक तड़पता रहा, पर उसे कोई अस्पताल नहीं ले गया और उसने वहीं पर दम तोड़ दिया।

इसके बाद, बच्चों से बात की गई कि सड़क पर सतर्क होकर चलना चाहिए। अगर किसी भी तरह की सड़क दुर्घटना देखें, तो तुरंत पुलिस को फोन करना चाहिए। बच्चों से इन सारे विषयों पर बातचीत की जानी चाहिए, जिससे वे समाज के संवेदनशील, जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बन सकें। सर्दियों की छुट्टियों के बाद भी बच्चों ने अपने अनुभव बताए। इस बार छुट्टियों को लेकर बच्चों का कहना था कि इतने दिन की छुट्टियाँ नहीं होनी चाहिए, वे घर पर बोर हो जाते हैं और इतनी ठंड में घर का काम भी करना

पड़ता है। बच्चों के साथ बातचीत में उन्हें यह विश्वास दिलाना पड़ता है कि वे जो भी जानते हैं, उसमें सही और गलत दोनों ही बातें हो सकती हैं।

शैक्षिक निहितार्थ

बातचीत को कक्षा शिक्षण का माध्यम बनाने से बच्चों को कक्षा शिक्षण से जोड़ने में काफी मदद मिल पाई और सीखना सार्थक हो सका। छोटी कक्षाओं के बच्चों के मामले में यह भी जरूरी हो जाता है कि वे कक्षा में जो भी करते हैं उसमें उन्हें सीखने के साथ-साथ खुशी भी मिले। कक्षा में बच्चों के साथ बातचीत के लिए संभावित रूपरेखा इस प्रकार हो सकती है—

- बच्चों के साथ बातचीत के लिए आवश्यक है कि हमारी पूर्व-योजना हो — हमें बच्चों के साथ क्या बात करनी है, सवालों की प्रकृति कैसी हो, सवालों में खुलापन हो और बच्चों के जवाबों को सवाल में बदला जाए, ताकि बातचीत को विस्तार दिया जा सके। इससे बातचीत को दिशा देने में मदद मिलती है।
- बच्चों के साथ उनके अनुभवों, संदर्भों पर बातचीत करनी चाहिए। इससे बच्चे संवाद के साथ जुड़ते हैं और अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं। जब बच्चों को संतोषजनक जवाब नहीं मिल पाता तो वे चर्चा में शामिल नहीं होते हैं।
- बच्चों के साथ रिश्ता भी बातचीत की एक प्रमुख आधारशिला हो सकती है। जब बच्चों के साथ रिश्ता गहरा होता है तो बच्चे बिना झिझक शिक्षक के पास अपनी समस्याओं के समाधान के लिए आते हैं, जिससे आगे की बातचीत शुरू की जा सकती है।
- कक्षा में बच्चों के परिवेश पर बातचीत करने से उनकी भाषा समृद्ध होती है और उन्हें एक दूसरे के अनुभवों से सीखने के मौके मिलते हैं। जब एक दिन बच्चों ने कागज बनने की प्रक्रिया पर कक्षा में चर्चा की, तो उन्हें इस बारे में अपने आस-पास से पता करके आने को कहा गया। कागज कैसे बनता है— इससे जुड़ी सभी जानकारी बच्चे स्वयं ही जुटा कर लाए थे। अतः कक्षा में परिवेश पर बातचीत भी एक महत्वपूर्ण औजार हो सकता है।
- बच्चे जब किसी भी समस्या के विभिन्न पहलुओं से परिचित होते हैं तो उनमें अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने व दूसरों की बात सुनने की क्षमता बढ़ती है और साथ ही उनका शब्द भंडार भी बढ़ता है। यानी किसी भी समस्या के विभिन्न पहलुओं से भी बातचीत की शुरुआत की जा सकती है।

निष्कर्ष

अतः कक्षा शिक्षण के अनुभव से यह समझ बनी कि बच्चों के साथ बातचीत एक प्रभावकारी 'शिक्षण सहायक सामग्री' है, जिसे कक्षा में भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए। वैसे तो हर कक्षा, भाषायी दृष्टि से, मौखिक भाषा से हमेशा ही भरपूर होती है, किंतु हम उसका सार्थक उपयोग कैसे करें यह समझने की जरूरत है— यानी मौखिक भाषा को बातचीत के रूप में बदलते हुए, कक्षा में बच्चों के सीखने की चुनौतियों को कम करने की दिशा में प्रयास किया जाए। कक्षा में बातचीत के द्वारा बच्चों को किसी विषय पर तर्क-वितर्क करने के पूरे मौके भी देने चाहिए, जिससे उनकी मान्यताओं को चुनौती मिले, वे सही-गलत का निर्णय करने में सक्षम हो पाएँ और संवैधानिक मूल्यों को समझने की कोशिश कर पाएँ।

संदर्भ

कुमार, कृष्ण. 2008. *बच्चे की भाषा और अध्यापक*. नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली.

डी.आई.इ.टी. 2012–13. *सरांकार— सेवारत शिक्षक-प्रशिक्षण मॉड्यूल*. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तराखंड, देहरादून.

———. 2014–15. *मंथन— सेवारत शिक्षक-प्रशिक्षण मॉड्यूल*. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. उत्तराखंड, देहरादून.

———. 2016–17. *अर्जन— सेवारत शिक्षक-प्रशिक्षण मॉड्यूल*. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तराखंड, देहरादून.

बधेका, गिजू भाई. 1962. *दिवास्वप्न*. बाल कल्याण समिति, लखनऊ.

मैथ्यूज, गैरथ बी. 1996. *बच्चों से बातचीत*. ग्रंथ शिल्पी प्रा.लि.

रा.शै.अ.प्र.प. 2010. रिमझिम— भाग 2 कैसे पढ़ाएँ. *शिक्षक संदर्शिका*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

सुनीता. 2019. कक्षा में बातचीत होने तो दीजिये. *पाठशाला भीतर और बाहर*. वर्ष 01, अंक 02, फरवरी 2019, पृ.सं. 106–112. अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलुरु.

हॉल्ट, जॉन. 2006. *असफल स्कूल* (हिंदी रूपांतरण). एकलव्य प्रकाशन, भोपाल.